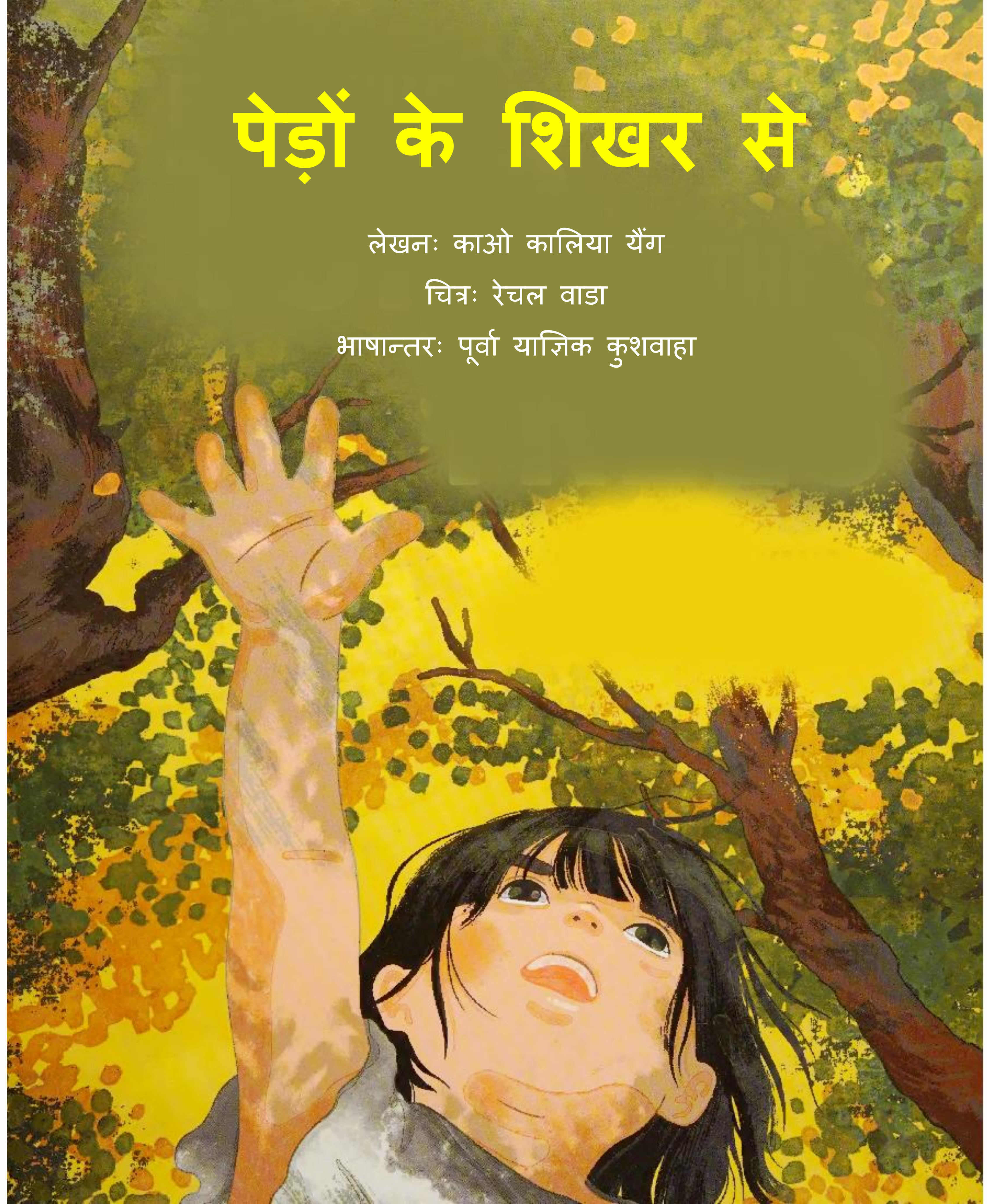
पेड़ों के शिखर से

लेखनः काओ कालिया यैंग

चित्रः रेचल वाडा

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



नन्ही कालिया को बान विनाई शरणार्थी शिविर की बाड़ के परे के जीवन के बारे में कुछ पता नहीं था। इस थाई शिविर में हज़ारों मोंग परिवार रहते थे जो अमरीका के वियतनाम युद्ध के दौरान लाओस में हुई एक अल्पज्ञात खुफिया जंग के चलते बच भागे थे। कालिया और उसकी चचेरी-मौसेरी बहनों के लिए जीवन हमेशा आसान नही था, पर वे इसके बावजूद आपस में खेलने के उपाय तलाश लेती हैं। वे मुर्गियों के साथ दौड़ लगातीं, या अपने चहेते कुत्ते की सवारी करतीं।

चार वर्षीय कालिया दुनिया में अपनी जगह को समझने की कोशिश कर रही है। जब वह अपने पिता से पूछती है कि शिविर की बाड़ के परे क्या है, वे उसे कोई जवाब नहीं दे पाते हैं। पर अगले दिन वे उसे शिविर के सबसे ऊँचे पेड़ पर ले जाते हैं। पिता की बाहों में महफ़ूज़ कालिया शिविर के परे पसरी दुनिया को देखती है।

काओ कालिया यैंग के संवेदनशील शब्द ओर रेचल वाडा के भावपूर्ण चित्र इस कोमल सत्य कथा को सजीव बनाते हैं। उस कथा को जो एक पिता और उसकी बेटी के प्रेम की है।



Ages 5–9
Reinforced binding





उन स्नेहिल बाँहों के लिए जो हमें इतना ऊपर उठाती हैं कि हम अपनी दुनियाओं की चारदीवारी के परे देख सकें।

-के. के. वाय.



कलिया के लिए जो पेड़ों के शिखर के परे गई ताकि अपनी कथा को दुनिया के साथ साझा कर सके।

-आर. डब्ल्यू.






पेड़ों के शिखर से



लेखनः काओ कालिया यैंग

चित्रः रेचल वाडा

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



बान विनाई शरणार्थी शिविर, थाईलैण्ड, 1985

जब सूरज आसमान में ठेठ ऊपर चढ़ आता है, हमारे पसन्दीदा पेड़ की पत्तियाँ ठंडक का एक विशाल छाता बन जाती हैं, जिसके नीचे मेरी चचेरी-मौसेरी बहनें और मैं खेलते हैं।

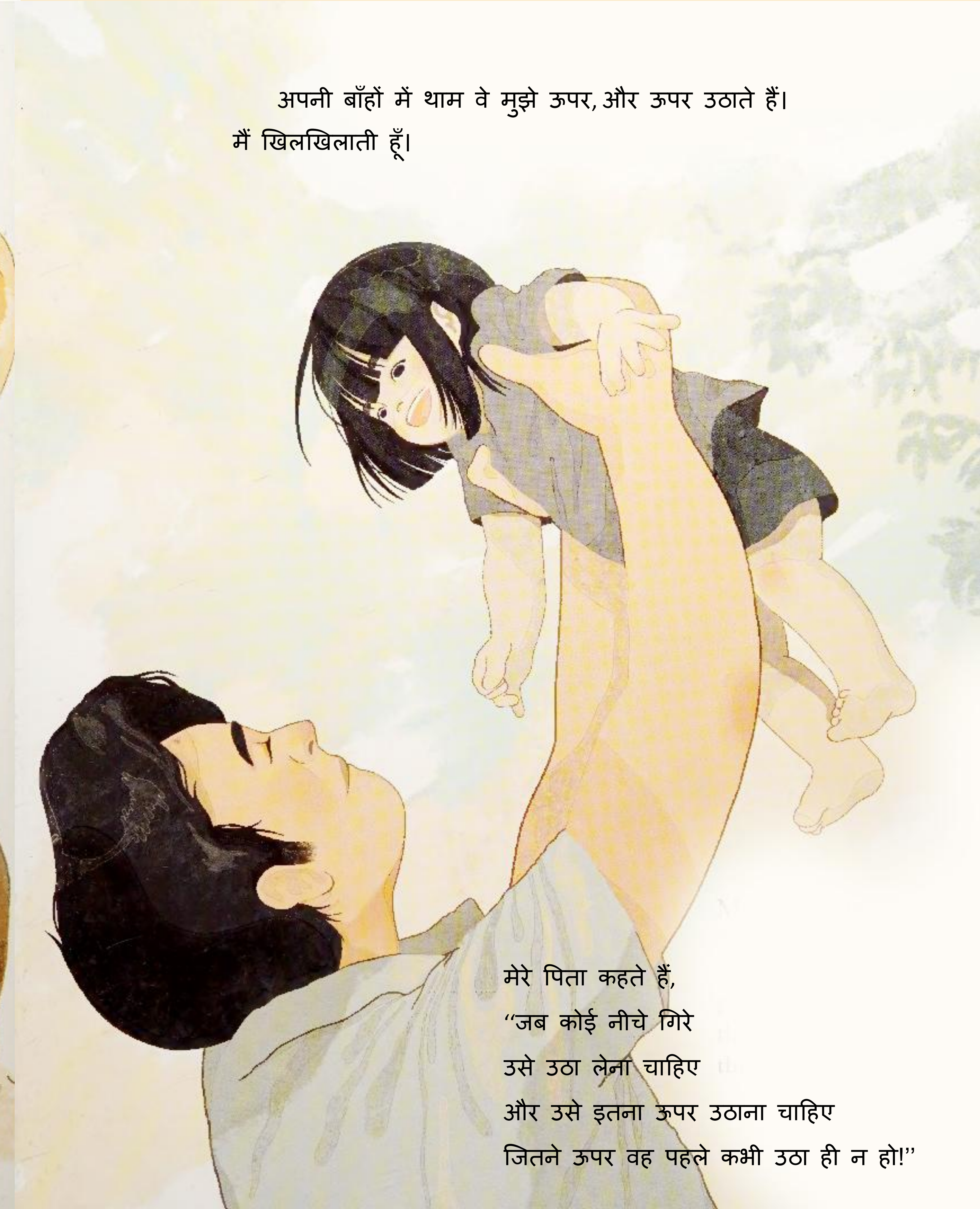
"जल्दी करो!"

माई चावल के एक लड्डू को गेंद जैसे ज़मीन पर फेंकती है। येर उसे पकड़ने मुर्गियों के पीछे दौड़ती है। पर एक गंजा मुर्गा जिसकी पूंछ पर काले पर हैं उसे पछाड़ देता है। येर का चेहरा इतना उदास और भूखा नज़र आता है कि खेल का मज़ा किरकिरा हो जाता है।





मैं हाथ हिला शेर कुत्ते और जैकी चैन कुत्ते को पास बुलाती हूँ। शेर कुत्तें की गरदन पकड़ उसकी पीठ पर चढ़ जाती हूँ। अपने छोटे पाँवों से उसकी बगलें दबाती हूँ, और कोशिश करती हूँ कि जब वह आगे बढ़े तो मैं नीचे न गिरूं। मैं महसूस करती हूँ कि मैं पीठ से फिसलने लगी हूँ, पर मैं डरती नहीं। मेरे पिता मुझे ऐन वक़्त थाम लेते हैं।



अपनी बाँहों में थाम वे मुझे ऊपर, और ऊपर उठाते हैं। मैं खिलखिलाती हूँ।

मेरे पिता कहते हैं,
"जब कोई नीचे गिरे
उसे उठा लेना चाहिए
और उसे इतना ऊपर उठाना चाहिए
जितने ऊपर वह पहले कभी उठा ही न हो!"

भारी बरसात और तेज़ हवाओं भरी रात के बाद, सुबह उठने पर हम पाते हैं कि हमारे चहेते पेड़ के नीचे कंकड़-से फल धरती पर बिखरे पड़े हैं। येर और मैं उंकड़ू बैठ उन फलों को तलाशते हैं जो अब भी खाने लायक हैं।

हम जानते हैं कि अगर हमने बहुत ज़्यादा फल खा लिए तो हमारे पेट दुखेंगे और हमारी माँएं बेहद नाराज़ हो जाएंगी। अगर हम सिर्फ एक या दो ही खाएं तो हम यह ढोंग कर सकती हैं कि हम कड़ी मीठी गोलियाँ खा रहे हैं, और यह अनोखी मिठाई है।







खामोशी में हम मौसियों को सीते-काढ़ते जंग के बारे में बतियाते सुनते हैं। वे एक-दूसरे से उस नदी के बारे में बात कर रही हैं जिसे उन्हें थाईलैण्ड आने के लिए पार करना पड़ा था। वे एक-दूसरे को बताती हैं कि “थाईलैण्ड चाहता है कि मोंग शरणार्थी उनका देश छोड़ चले जाएं।” वे अपने देश लौटने से डरती हैं। किसी नए देश जाने से भी डरती हैं। वयस्क जंग की बात करते हैं और वे फिर से इस कदर डरने लगते हैं, मानो जंग खत्म ही न हुई हो।



उस दोपहर मैं अपने पिता से जंग के बारे में पूछती हूँ, और वे कहते हैं, "तुम महफ़ूज़ हो।"

वे मेरा छोटा-सा हाथ अपने बड़े से हाथ में लेते हैं और मुझे कहते हैं, "अपने हाथ को देखो।" तब मेरे पैरों की उंगलियों की ओर इशारा कर कहते हैं, "अपने पैरों को देखो।"

वे कहते हैं, "तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पैर दूर तक सफ़र करेंगे ताकि शान्ति को तलाश लें।"

उनकी आँखें उतनी ही संजीदा हैं जितनी उनकी आवाज़, सो मैं कहती हूँ, "हाँ वे ऐसा ही करेंगे।"







राशन बंटने का दिन है। हर सप्ताह एक बड़ा ट्रक हम जहाँ रहते हैं उसके बीच वाली खाली जगह आता है। थाई सैनिक हरेक परिवार को सिर्फ उतना सामान देते हैं जो बस तीन दिनों के लिए काफ़ी हो। वे हमें कहते हैं कि वे "मानवीय निवारक नीति लागू कर रहे हैं" ताकि और मोंग लोग उनके देश में न आएं। मुझे नहीं मालूम कि किस बारे में बात कर रहे हैं। पर मैं यह जानती हूँ कि मेरे आस-पास जितने भी वयस्क हैं, वे उस बात को समझते हैं, सो मैं भी अपना सिर यों हिलाती हूँ मानों मैं सब समझ रही हूँ।





उस शाम नहाने के पहले मैं सीमेंट से बने कुंए के नीचे झाँक पिता से पूछती हूँ कि हम एक बाड़ के दरवाज़े के पीछे क्यों रहते हैं। मैं जानना चाहती हूँ कि अगर लोग अन्दर आ सकते हैं तो हम बाहर क्यों नहीं जा सकते। वे कहते हैं, ‘‘हम एक शरणार्थी शिविर में रहते हैं। यह वह जगह है जिसमें उन लोगों को रखा जाता है जो जंग के कारण अपने देश से भागे हों।’’

मैं पूछती हूँ, ‘‘बाबा क्या पूरी दुनिया ही एक शरणार्थी शिविर है?’’

‘‘नहीं,’’ वे कहते हैं।

‘‘इस शिविर के बाहर की दुनिया भला कैसी है?’’ मैं पूछती हूँ।

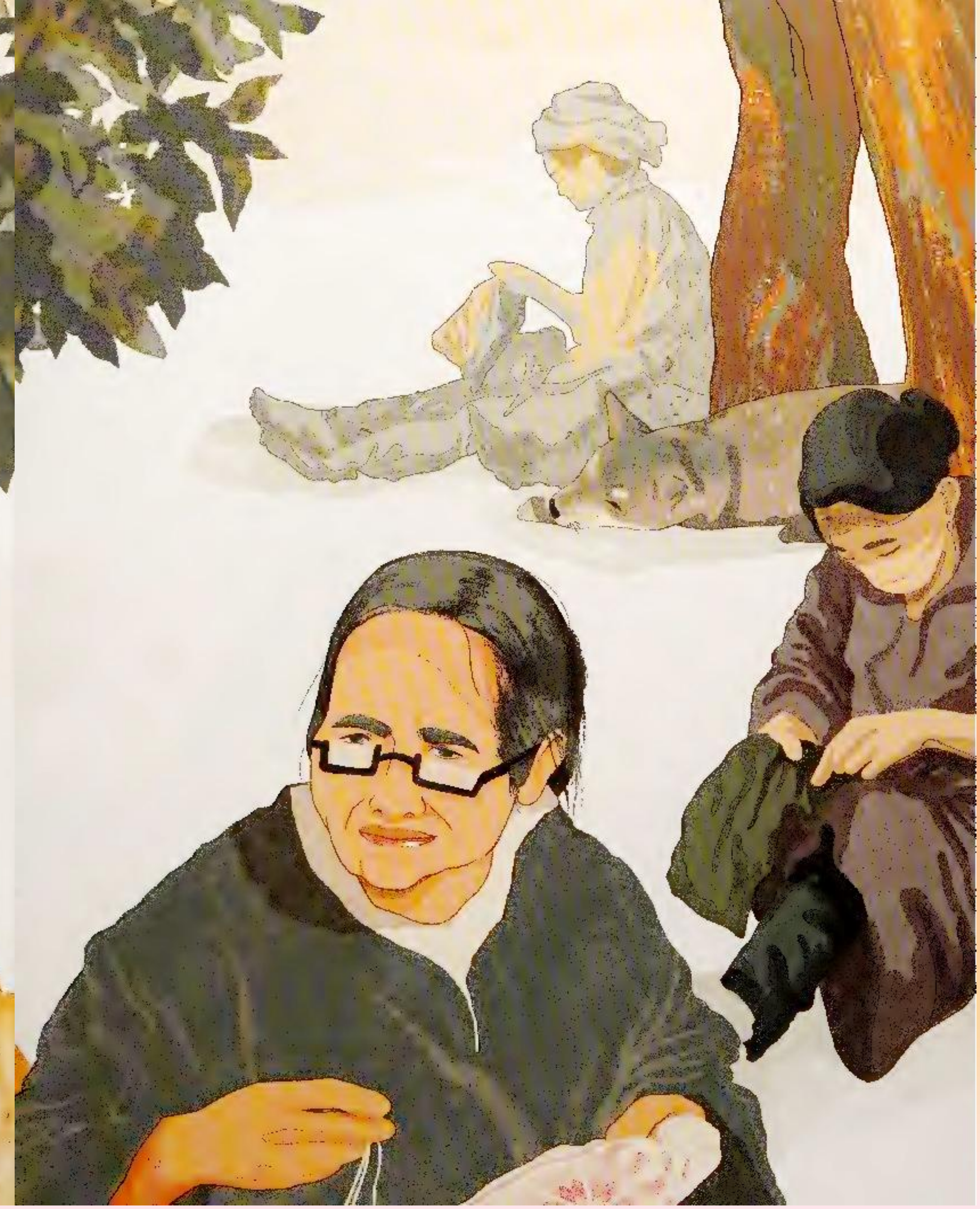
मेरे पिता के पास मेरे इस सवाल का जवाब नहीं है।



अगले दिन जब माई, येर और मैं
हमारे पेड़ के नीचे खेल रहे थे, मेरे पिता वहाँ जाते हैं
जहाँ मेरी माँ और मासियाँ बैठी सिलाई-कढ़ाई कर रही थीं।
मैं उन्हें माँ से कहते सुनती हूँ, ''च्यू क्या तुम कालिया को
उसकी सुन्दर फ्रॉक और टोपी पहना सकती हो?''
मेरी माँ फोटो खिंचवाते समय के सिवा मुझे
वह फ्रॉक कभी पहनने नहीं देती।

वे अपनी आवाज़ें धीमी कर लेते हैं। आख़िरकार मेरी
माँ अपना सिर हिलाती है और अपनी कढ़ाई नीचे रख
खड़ी हो जाती है। माँ अपना हाथ हिला
मुझे इशारे से अपने पीछे आने को कहती है।





उस छोटे कमरे में जहाँ हम बाँस के तख्त पर बिछाए हुए कम्बल के ऊपर सोते हैं, माँ वह बक्सा खोलती है जिसमें वह हमारे अच्छे कपड़े रखती है। माँ मेरी सुन्दर फ्रॉक ओर टोपी निकालती है। वह पिता की बढ़िया पतलून ओर कमीज़ भी निकालती है। वह मेरी रोज़मर्रा की टी शर्ट और पतलून उतारने में मदद करती है। और उसी टी शर्ट से मेरा बदन पोंछ मुझे अपने हाथ ऊपर उठाने को कहती है।



मैं सुन्दर फ्रॉक के ठंड देने वाले कपड़े को तन पर महसूस करती हूँ। जब वह पीठ की ओर लगे बटनों को एक-एक कर बन्द करती है, मैं खुद को सुन्दर, और-ओर सुन्दर हाते जाते महसूस करती हूँ। मुझे टोपी पहनाने के पहले, वह मेरे बाल संवारती है। मुझे सावधानी से देखने के बाद वह फिर से सिर हिला मुस्कुराती है।



बाहर मेरे पिता किसीसे उधार लिए कैमरा के साथ खड़े हैं। हमारे कमरे से निकलने पर वे कैमरा माँ को पकड़ाते हैं।

“मैं जल्दी से कपड़े बदल लेता हूँ,” वे कहते हैं।





हमारे बढ़िया कपड़ों में पिता मुझे शिविर के सबसे लम्बे पेड़ के पास ले जाते हैं। वे मुझसे कहते हैं कि मैं अपनी आँखें मूंद लूं और उनकी गरदन को मज़बूती से पकड़ूं, किसी हालत में उसे न छोड़ूं। माई और येर पेड़ के तने के पास खड़ी, अपने मुँह पर हाथ धरे, हमें घूर रही हैं। पेड़ की छाया में बैठी मौसियाँ अपने हाथ के काम से आँखें उठा देखने लगती हैं कि हम कर क्या रहे हैं।

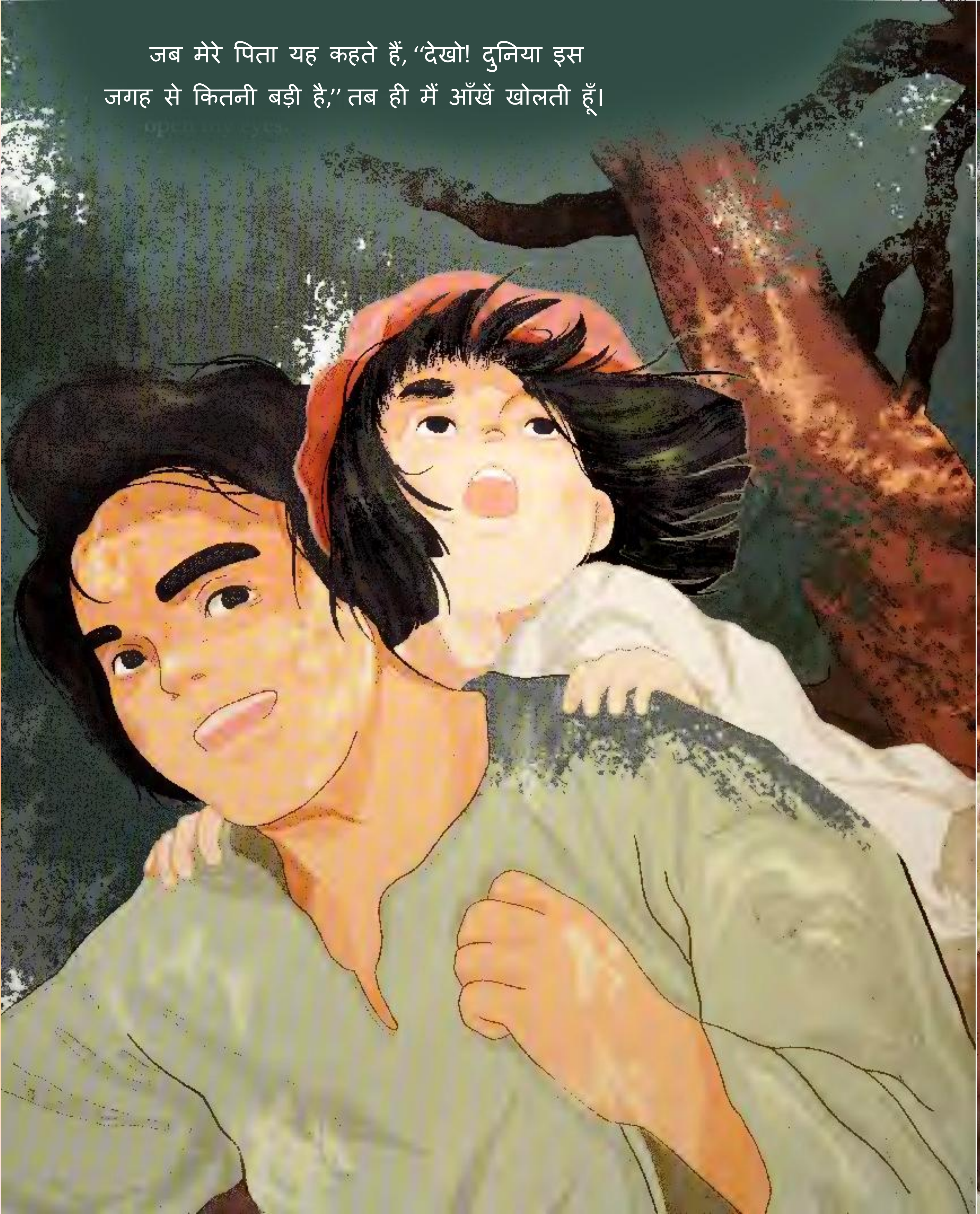
लम्बे पेड़ पर पिता को चढ़ता महसूस कर मैं कुछ काँपती हूँ। मैं उन्हें भरसक मज़बूती से पकड़े हुए हूँ। इतनी मज़बूती से तो मैंने कभी शेर कुत्ते या जैकी चैन कुत्ते तक को उनकी सवारी करते वक़्त नहीं पकड़ा था। अपने दिल को मैं अपने पलकों पर धड़कते महसूस करती हूँ।

पिता एक बार थोड़ा-सा फिसलते हैं, और नीचे मेरी माँ चीखती है। पर मैं न अपनी पकड़ ढ़ीली करती हूँ, न आँखें खोलती हूँ।





जब मेरे पिता यह कहते हैं, “देखो! दुनिया इस जगह से कितनी बड़ी है;” तब ही मैं आँखें खोलती हूँ।

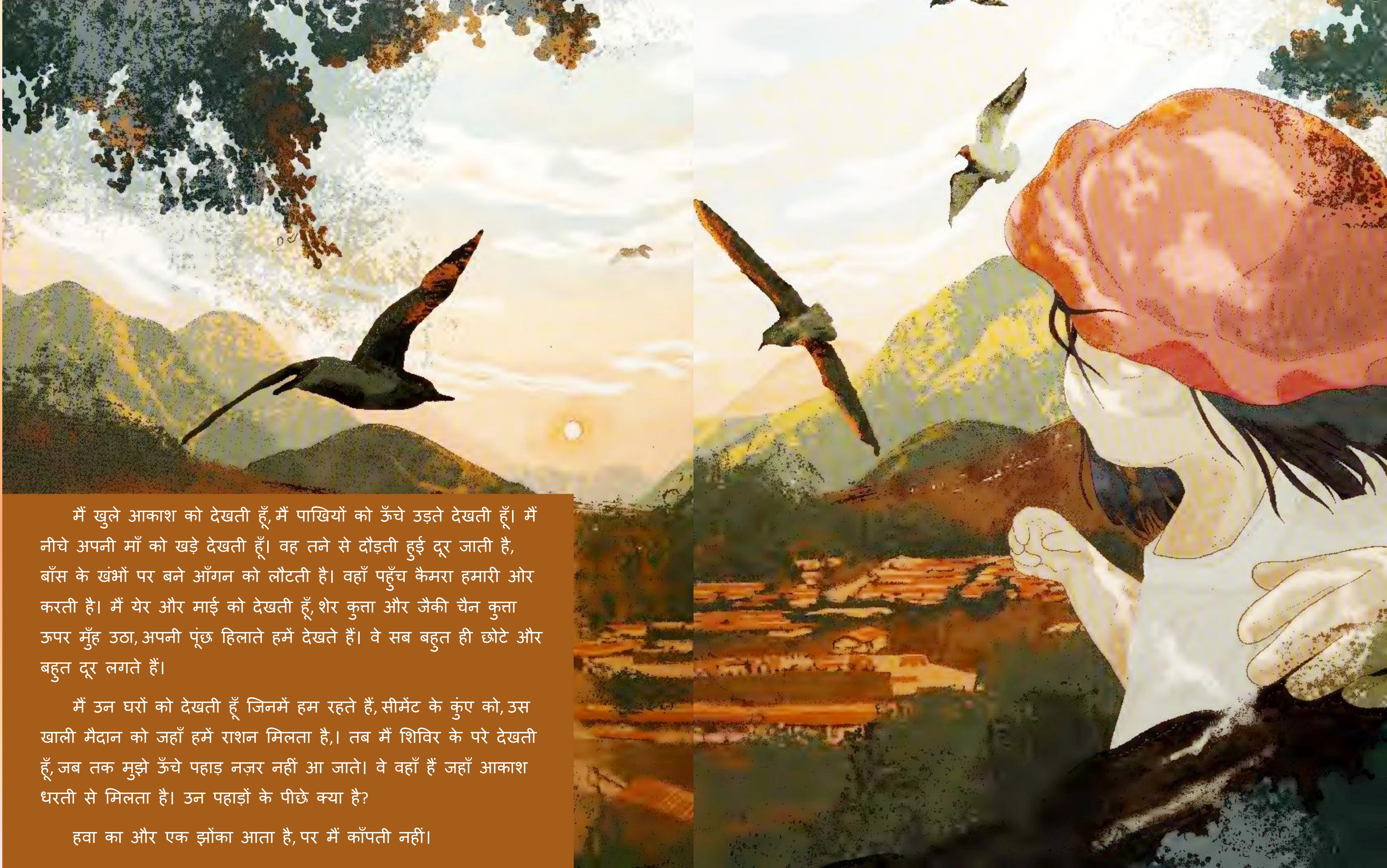




मैं पहले कभी जितना ऊपर चढ़ी थी उससे कहीं ज़्यादा ऊपर हूँ।

हवा बहती है ओर पत्ते हिलते हैं और मैं उनके साथ हिलती हूँ। मेरे पिता कहते हैं, “डरो मत।”





मैं खुले आकाश को देखती हूँ, मैं पाखियों को ऊँचे उड़ते देखती हूँ। मैं नीचे अपनी माँ को खड़े देखती हूँ। वह तने से दौड़ती हुई दूर जाती है, बाँस के खंभों पर बने आँगन को लौटती है। वहाँ पहुँच कैमरा हमारी ओर करती है। मैं येर और माई को देखती हूँ, शेर कुत्ता और जैकी चैन कुत्ता ऊपर मुँह उठा, अपनी पूंछ हिलाते हमें देखते हैं। वे सब बहुत ही छोटे और बहुत दूर लगते हैं।

मैं उन घरों को देखती हूँ जिनमें हम रहते हैं, सीमेंट के कुंए को, उस खाली मैदान को जहाँ हमें राशन मिलता है,। तब मैं शिविर के परे देखती हूँ, जब तक मुझे ऊँचे पहाड़ नज़र नहीं आ जाते। वे वहाँ हैं जहाँ आकाश धरती से मिलता है। उन पहाड़ों के पीछे क्या है?

हवा का और एक झोंका आता है, पर मैं काँपती नहीं।

“बाबा, दुनिया तो बहुत बड़ी है,” मैं कहती हूँ।

मेरे पिता जवाब देते हैं, “हाँ, है तो,” वे कोमल आवाज़ में कहते हैं। “एक दिन मेरी नन्ही दुनिया में बहुत दूर तक सफ़र करेगी। उन जगहों का जहाँ उसका पिता कभी नहीं गया।”

मेरे पिता मुझे कैमरा की ओर ताक मुस्कुराने को कहते हैं। पर मैं मुस्कुरा नहीं पाती, क्योंकि मैं अब जानती हूँ कि मैंने जितनी कल्पना की थी, दुनिया उससे कहीं बड़ी है। मेरे छोटे पैरों को मुझे बहुत दूर ले जाना पड़ेगा।









काओ कालिया यैंग, एक मोंग लेखिका हैं उन्होंने *अ मैप इन टू द वर्ल्ड, द शेयर्ड रूम,* तथा *द मोस्ट ब्यूटिफुल थिंग,* सचित्र बाल पुस्तकों की रचना की है। उन्होंने वयस्कों के लिए भी कई पुस्तकें लिखीं हैं, जिनमें *लेटहोमकमर, अ मोंग फैमिली मैमोयर, द साँग पोएट* तथा *समवेयर इन द अननोन वर्ल्ड* शामिल हैं। यैंग की अधिकांश रचनाएं उन लोगों से प्रेरित हैं, जां उनके जीवन में थे और जिन्होंने उपनी कथाओं की ताकत उन्हें भैंट में दी। वे मिनेसोटा में अपने पति, बेटी और जुडवाँ बेटों के साथ रहती हैं।



रेचल वाडा जापान और हाँगकाँग में पली-बढ़ीं। वे फिलहाल वैन्कूवर, ब्रिटिश कोलम्ब्यिा में रहती हैं। उन्होंने कई पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, विज्ञापनों और एक म्यूरल तक को अपने चित्र दिए हैं। *द फोनबूथ इन मिस्टर हिरोतोस् गार्डन* वह पहली पुस्तक थी जिसे उन्होंने चित्रित किया था। इस पुस्तक को फ्रीमैनल अवॉर्ड फॉर चिल्ड्रन्स लिटरेचर से नवाज़ा गया था।

